इकाई 3 कक्षा में निर्देशन

संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 निर्देशन तथा पाठ्यचर्या

3.3.1 पाठ्यचर्या की अवधारणा

3.3.2 संगत व सार्थक पाठ्यचर्या के मानदंड (निकष)

3.3.3 निर्देशन तथा पाठ्यचर्या का समाकलन

3.3.4 विद्यालयी पाठ्यचर्या द्वारा निर्देशन

3.4 निर्देशन तथा अधिगम

3.4.1 अधिगम प्रक्रियां की प्रकृति

3.4.2 अधिगम सामग्री तथा अध्यापक का महत्व

3.4.3 अध्येता का महत्व

3.4.4 कक्षा अधिगम तथा निर्देशन में निहित मनोवैज्ञानिक कारक

3.5 निर्देशन तथा अनुशासन

3.5.1 कक्षा अनुशासन तथा निर्देशन विधियाँ

3.5.2 व्यवहार तथा अनुचित व्यवहार (दुर्व्यवहार)

3.5.3 अनुशासन की नई विधियाँ

3.6 सारांश

3.7 अभ्यास कार्य

3.1 प्रस्तावना

कक्षा की अवस्थिति में निर्देशन तथा श्रेष्ठ अध्यापन अविच्छेद्य प्रक्रियाएँ हैं। अच्छे अध्यापक सदैव अधिकांश वे क्रियाएँ ही करते हैं जिन्हें निर्देशन की संज्ञा दी जाती है। वे पाठ्यचर्या, शिक्षण या अधिगम की विधियों तथा अनुशासन को बालक के विकास के साधनों के रूप में प्रयोग में लाते हैं।

इकाई 1 तथा 2 के अध्ययन के पश्चात्, जिन्हें क्रमशः निर्देशन-उपबोधन तथा परामर्श-उपबोधन का नाम दिया गया है, आप निर्देशन तथा परामर्श की अवधारणा तथा इनके शैक्षिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में निहितार्थों को समझ गए होंगे। आइए, इस इकाई में हम कक्षा में पढ़ाए गए विषय की प्रासंगिकता के रूप में निर्देशन के उपयोगों को समझें और यह देखें कि इन विषयों को कैसे पढ़ाया जाए तथा कक्षा का प्रबंधन किस भांति किया जाए।

आइए, यह भी देखें कि पाठ्यचर्या के माध्यम से बच्चों की आवश्यकताओं को कैसे पूरा किया जा सकता है, अनुशासन को कैसे सुधारा जा सकता है और एक निर्देशन-मनस्क (guidance minded) अध्यापक अपने विद्यार्थियों की अधिक अच्छा सीखने में कैसे सहायंता कर सकता है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जाएँगे कि:

- कक्षा की स्थिति में अनुशासन स्थापित करने के लिए निर्देशन के महत्व को व्यक्त कर सकेंगे

- अनुशासन संबंधी समस्याओं से निपटने के लिए युक्तियाँ सुझा सकेंगे;
- निर्देशन के लक्ष्यों तथा पाठ्यचर्या के बीच समानताओं तथा विभेदों को पहचान सकेंगे;
- विद्यालय में सहपाठ्यचारी क्रियाओं की आवश्यकताओं के महत्व को बता सकेंगे;
- अध्यापन में अधिगम के कुछ मूलभूत सिद्धान्तों का उपयोग कर सकेंगे; और
- जिन बच्चों को सीखने में कठिनाई होती है उनकी सहायता कर सकेंगे।

3.3 निर्देशन तथा पाठ्यचर्या

इस बात पर बार-बार बल दिया गया है कि निर्देशन सेवाएँ विद्यालय का अनिवार्य अंग होती हैं (इकाई 1 को देखें; निर्देशन उपबोध)। परन्तु दुर्भाग्य यह रहा है कि पाठ्यचर्यात्मक विषयों में निर्देशन कार्यक्रमों का उपयोग बहुत ही कम विद्यालय कर पाएँ हैं।

प्रारंभिक रूप में, निर्देशन कार्य का महत्व व्यक्ति की समंजन प्रक्रिया (adjustment process) से संबंधित रहा है। विद्यालयों में इस संदर्भ में उद्देश्य यह रहा है कि विद्यार्थियों की प्रचलित या विद्यमान विषयों में से उनकी आवश्यकताओं तथा योग्यताओं के अनुसार उपयुक्त विषयों के चयन में कैसे सहायता की जा सकती है। अतः यह इकाई निर्देशन कर्मियों (guidance personnel) के ज्ञान तथा प्रशिक्षण के उपयोग की संभावनाओं का पता लगाने तथा उनके द्वारा किए जाने वाले प्रयासों के परिणामों को किसी अन्य उपयुक्त दिशा में, जैसे, स्वयं पाठ्यचर्या निर्माण तथा इसमें सुधार लाना, प्रयोग में लाने के लिए समर्पित हैं।

3.3.1 पाठ्यचर्या की अवधारणा

शैक्षिक दृष्टि से, "पाठ्यचर्या विद्यार्थियों के समग्र अनुभवों का योग है चाहे वे अनुभव औपचारिक हों अथवा अनौपचारिक, और चाहे वे कक्षा के अंदर प्राप्य हों अथवा बाहर" निर्देशन की दृष्टि से पाठ्यचर्या को विद्यालय द्वारा प्रदत्त सुनियोजित अनुभवों के रूप में देखा गया है। इस बात को निश्चित रूप से समझा जाए कि विद्यार्थी अपने समस्त अनुभवों से सीखते हैं, मात्र उन अनुभवों से ही नहीं जो कक्षा के अंदर प्राप्त किए जाएँ, जैसे पाठ्य-सामग्री तथा अन्य कार्यकलापों द्वारा प्रदत्त अनुभव नियमित कक्षा में दिए गए अनुभवों से भिन्न होते हैं।

व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करना (Meeting individual needs)

पाठ्यचर्या ऐसी हो जो विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का निर्वाह अवश्य कर सके। एक अर्थ में, पाठ्यचर्या विद्यालयी क्रियाकलापों की सीमाओं को निश्चित करती है। यह एक महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि प्रत्येक समुदाय में वे सेवाएँ जिनसे विद्यार्थियों का लाभ हो सकता है इतने अलग-अलग प्रकार की होती हैं कि उन सभी को विद्यालय द्वारा दिया जाना असंभव प्रतीत होता है। अतः विद्यालय मात्र उन कार्यकलापों को ही चुनें जिन्हें प्रदान करने में यह मुख्य दायित्व ग्रहण कर सकने में सक्षम हों।

अतः पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातों के लिए निश्चित अवसर प्रदान करने में सक्षम हो: (i) जीवन में अपना स्थान खोजना तथा जीवन दर्शन स्पष्ट करना, (ii) संतोषजनक समकक्ष (peer) संबंध स्थापित करना, (iii) परिवार से स्वतंत्र होना, तथा (iv) शारीरिक वृद्धि और परिवर्तनों से सामायोजन करना।

3.3.2 संगत व सार्थक पाठ्यचर्या के मानदंड (निकष)

विद्यार्थियों की उपरोक्त आवश्यकताओं के निवर्हन के लिए हमारे विद्यालयों के शैक्षणिक कार्यक्रम ऐसे हों कि वे: (1) युवकों की आवश्यकताओं के अनुकूल हों, (2) सामाजिक व्यवस्था की आवर्ती आवश्यकताओं (recurring needs) को पूरा कर सकें, तथा (3) अधिगम प्रक्रिया के साथ समरस रूप में (in harmony with) विकसित हों।

1. **युवकों की आवश्यकताएँ:** यह प्रथम निकष विद्यार्थियों की सामान्य सामूहिक आवश्यकताओं और विशिष्ट या व्यक्तिगत आवश्यकताओं से संबंधित है।

   क) **सामान्य या सामूहिक आवश्यकताएँ:** सभी विद्यार्थियों की कुछ सामूहिक या साझी मूलभूत आवश्यकताएँ होती हैं; जैसे, उन सभी को नागरिक बनना है; लगभग सभी विवाह करेंगे तथा बच्चों का पालन पोषण तथा परिवार का निर्वाह करेंगे, सभी के जीवन यापन के लिए कुछ कमाने की आवश्यकता है, सभी आपस में मिलते जुलते रहेंगे और अन्य व्यक्तियों के साथ समंजित रहना चाहेंगे; सभी के पास मत देने का दायित्व होगा, इत्यादि।

   (ख) **विशिष्ट आवश्यकताएँ:** इन सामूहिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त, कुछ व्यक्तिगत आवश्यकताएँ अथवा रुचियाँ होती हैं, जैसेः कुछ विद्यार्थी कालेज में प्रवेश लेकर अपने अध्ययन को आगे बढ़ाना चाहेंगे; कुछ विद्यार्थी किसी न किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना चाहेंगे; कुछ अपने पैतृक कारोबार को चलाएँगे, तथा कुछ ऐसे भी होंगे जो किसी व्यावसायिक (professional) पाठ्यचर्या में प्रवेश लेना चाहेंगे जैसे मेडिकल कालेज, इंजीनियरिंग या वास्तुकला। सामान्य आवश्यकताओं को तो आसानी से पहचाना जा सकता है और उनकी पूर्ति विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों के नियोजन से की जा सकती है।

   अपनी आवश्यकताओं तथा रुचियों के आधार पर किसी भी पाठ्यक्रम को चुन सकते हैं और उसमें प्रवेश ले सकते हैं। विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति दो तरीकों से हो सकती हैः (क) कुछ विशिष्ट पाठ्यक्रमों का चयन करके या विद्यार्थियों को विभिन्न समूहों में बाँट कर; जैसे जो विद्यार्थी मेडिकल कालेज में प्रवेश चाहते हैं उन्हें केवल विज्ञान विषयों का अध्ययन करना होगा, तथा (ख) अन्य विशिष्ट आवश्यकताओं का ध्यान अध्यापक या परामर्शदाता द्वारा रखा जाता है; जैसेः जो विद्यार्थी 10 + 2 स्तर पर विज्ञान विषय पढ़ रहे हैं उनकी सहायता विभिन्न विज्ञान प्रतियोगिताओं की तैयारी करके की जा सकती है, जैसे, मेडिकल अथवा इंजीनियरिंग के लिए तैयारी।

2. **अपनी सामाजिक व्यवस्था की आवर्ती आवश्यकताओं की पूर्ति:**

   यद्यपि बहुत सारी ऐसी आवश्यकताओं को पहचान पाना कठिन है तथापि कुछ आवश्यकताएँ बहुत ही सुस्पष्ट होती है। हमारे समाज की यह अपेक्षा है कि सभी व्यक्ति अपने नाम लिखने और पढ़ने योग्य हो जाएँगे, वे मतपत्रों पर लिखे नामों को पढ़ सकेंगे, तथा यातायात के चिन्हों को पढ़ सकेंगे ताकि दिशाओं को समझ सकें, अपना रुपया-पैसा गिन सकेंगे, अपने हस्ताक्षर कर सकेंगे। कुछ सामाजिक दबाव अधिक जटिल होते हैं, उदाहरणार्थ, चिकित्सकों से यह अपेक्षा होती हैं कि वे अपना अध्ययन स्वतंत्र रूप से जारी रखेंगे ताकि वे औषधि के क्षेत्र में हुए आधुनिकतम शोधों से अवगत रहें।

3. **अधिगम प्रक्रिया तथा पाठ्यचर्या:**

इस तीसरे निकष (मानदण्ड) को और अधिक भली भांति समझा जा सकता है यदि हम निम्नांकित तालिका का ध्यान से अध्ययन करें।

एक अच्छे अधिगम अनुभव प्रदान करने के लिए आवश्यक विचारणीय विषय		इसे कैसे उपलब्ध किया जाए	निर्देशन कार्यक्रम का योगदान
1.	विद्यार्थियों की तत्परता के अनुरूप अनुदेशन (instruction) होना चाहिए।	पहले किए गए कार्य की समीक्षा।	समूह-चर्चा तथा वृत्तिक वार्ताएं
2.	बच्चों की मानसिक योग्यता को ध्यान में रखा जाए	परीक्षण	मनोवैज्ञानिक परीक्षण तथा साक्षात्कार

3.	विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करना अनिवार्य है।	परीक्षण	व्यावसायिक सूचना प्रदान करना तथा अभिप्रेरणामूलक बातचीत करना
4.	जब विद्यार्थी उपयुक्त अनुक्रिया करे तो उसे प्रबलित अवश्य किया जाए	पुरस्कार देकर	वृत्तिक उत्सव तथा वृत्तिक प्रदर्शिनी आदि द्वारा
5.	विद्यार्थियों के पास कुछ साधन ऐसे अवश्य हों जिनसे वे अपनी अनुक्रियाओं की उपयुक्तता का मूल्यांकन कर सकें।	प्रश्नावलियाँ तथा उपबोधन	स्वनिर्धारण तथा वृत्तिक पाठ्यक्रम

3.3.3 निर्देशन तथा पाठ्यचर्या का समाकलन

कक्षा में, निर्देशन केन्द्रों पर, प्रशासनिक कार्यक्रम द्वारा सहपाठ्यचारी क्रियाओं के द्वारा, घर पर तथा समुदाय में प्राप्त अधिगम-अनुभवों के प्रकाश में यह अनिवार्य हो जाता है कि निर्देशन पाठ्यचर्या का एक अभिन्न अंग है। आइए, अब आगे हम निर्देशन तथा पाठ्यचर्या के समाकलन के मूलाधार पर विचार करें।

1. **ध्येयों की समरूपताः** दोनों ही क्षेत्रों में प्रकार्यात्मक केन्द्र विद्यार्थी ही होते हैं। आज पाठ्यचर्या एक विषय-केन्द्रित उपागम से हटकर एक विद्यार्थी केन्द्रिक उपागम का रूप धारण कर चुकी है, और चूँकि विद्यालय में अधिकांश समय विद्यार्थी अध्यापक के साथ रहता है अतः दोनों क्षेत्रों (निर्देशन तथा पाठ्यचर्या) का एक महत्वपूर्ण ध्येय यह बन जाता है कि अध्यापक की इस प्रकार सहायता करना कि वह विद्यार्थी की स्वयं सीखने में, अपना समंजन करने में तथा सक्षमता प्राप्त करने में सहायता कर सकें।

2. **कार्यों में समानताः** प्रकार्यों में कुछ महत्वपूर्ण समानताएँ निम्नलिखित हैं:

   (क) **समग्र व्यक्ति की आवश्यकताएँ:** इस प्रकार्य का उद्देश्य है कि समग्र व्यक्ति की आवश्यकताएँ, अर्थात् उसकी शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक तथा मानसिक -पूर्ण हो सकें। इसके लिए ऐसी क्रियात्मक स्थितियों में, जैसे खेल का मैदान, सहपाठ्यचारी क्रियाएँ, सभागार, बरामदों तथा कक्षाओं में विद्यार्थियों के सक्रिय व्यवहार का अवलोकन करते रहना आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है। अध्यापक एवं परामर्शदाता को मात्र विद्यार्थी की पृष्ठभूमि के ज्ञान संबंधी आँकड़ों तथा उसके कक्षा के निष्पादन मात्र से ही संतुष्ट नहीं रहना चाहिए।

   (ख) **विद्यार्थियों की आवश्यकताओं तथा समस्याओं को पहचानना**

   यदि परामर्शदाता, पाठ्यचर्या विशेषज्ञ, तथा अध्यापक अपने विशिष्ट कौशलों का अपनी अतर्दृष्टि तथा विशेषज्ञताओं का उपयोग करते हुए सब मिल कर कार्य करें तो बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान करने में अधिक सार्थक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

   अधिकांशतः निर्देशन स्टाफ परामर्श को विद्यार्थियों की समस्याओं की पहचान करने के लिए एक साधन के रूप में तो चुनते हैं, किन्तु अधिकांश में वे इस ज्ञान को, कि विद्यार्थियों की समस्याएँ क्या होती है, अपने तक सीमित रखते हैं। परामर्शदाताओं द्वारा व्यक्त सामान्य समस्याएँ निम्नलिखित हैं: योग्यतानुसार उपलब्धि प्राप्त न कर सकना, सामान्य रूप से विद्यालयी पाठ्यक्रम में असफलता, घर के अन्दर के मधुर सम्बन्धों में विघटन, सामाजिक कुसमायोजन आदि। दूसरी ओर अध्यापकों द्वारा व्यक्त की गयी विद्यार्थियों की समस्याएँ हैं: किशोरापराधी, अनुपस्थित होने की प्रवृत्ति (absentism) तथा अभिमुखीकरण का अभाव। क्या यह अपेक्षित नहीं है कि

इन सभी समस्याओं या समस्या क्षेत्रों के निराकरण के लिए समस्त संकाय समूह तथा अभिभावक परस्पर सहयोग करें, चर्चा करें तथा इनके समाधान में सहायता करें? इन सभी समस्याओं के निर्देशन संबंधी निहितार्थ पाठ्यचर्या में, तथा घर तथा समुदाय के साथ काम करने में, विद्यालय में, तथा सामान्य अच्छे समूह-मनोबल के लिए होते हैं।

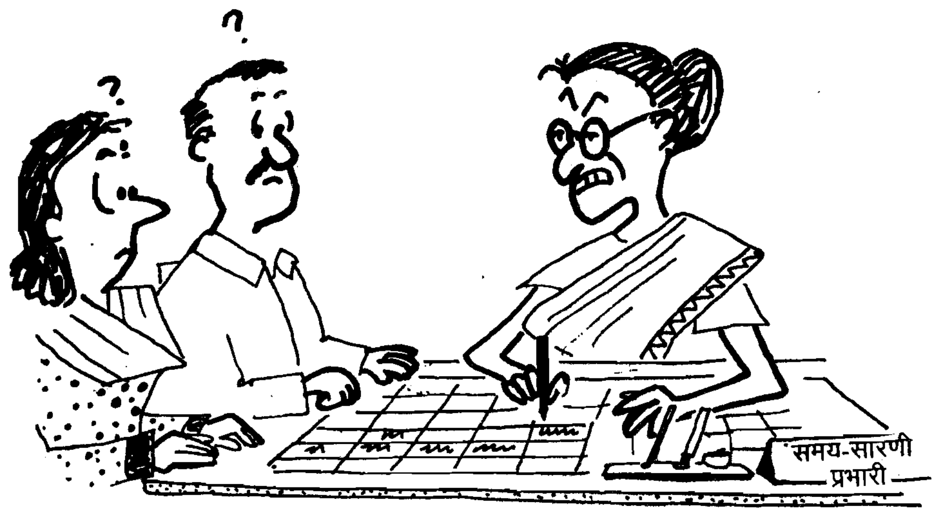

ग) **सभी व्यक्तियों के साथ कार्यः** निर्देशन तथा पाठ्यचर्या स्टाफ का प्रकार्य सभी व्यक्तियों - जैसे विद्यार्थियों, अभिभावकों, अध्यापकों तथा समुदाय के साथ एक जैसा होता है। पाठ्यचर्या स्टाफ तथा अध्यापकों को परामर्शदाता द्वारा दी गई सहायता मूल्यवान होती है, उदाहरणार्थ, वह उन्हें कुल अभिलेखों से अवगत कराएगा जो उनके उपयोग के लिए निर्देशन कार्यालय में उपलब्ध हैं। परामर्शदाता विद्यार्थियों तथा अध्यापकों की उन पाठ्यचर्या संबंधी तथा कार्यपरक अनुभवों को मालूम करने में सहायता कर सकता है जो समस्याओं के समाधान तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपेक्षित पृष्ठभूमि प्राप्त करने में सहायक हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे अवसर भी मिलेंगे जब निर्देशन - परामर्शदाता तथा अध्यापक का किसी सम्मेलन में अभिभावकों के साथ बैठना काफी लाभदायक हो सकेगा।

3. विषयवस्तु तथा शैक्षिक संसाधन सामग्री में समानता

व्यावहारिक रूप से निर्देशन कार्यक्रम की समस्त पाठ्यवस्तु विद्यार्थियों को पाठ्यचर्या अनुभव प्रदान करने में सक्षम होती है। ऐसे प्रकरण जैसे व्यावसायिक या वृत्तिक निर्देशन, घर तथा परिवार, स्वास्थ्य तथा शारीरिक विकास, दूसरों के साथ कार्य कर सकने की योग्यता आदि को पाठ्यचर्यात्मक अनुभवों में परिवर्तित किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त प्रायः पुस्तकालय या निर्देशन कार्यालय में एक भली-भांति स्थापित निर्देशन एकक (unit) का स्थान होता है जिसमें पुस्तकें या अन्य उपयोगी अध्ययन सामग्री उपलब्ध होती है तथा जिसका उपयोग कक्षा में पाठ्यचर्यात्मक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लाभप्रद होता है।

4. विद्यार्थियों के संग कार्य करने की समान क्रियाविधि तथा तकनीकें

निर्देशन तकनीकें जैसे केस अध्ययन, साक्षात्कार, वृत्तांत अभिलेख (annedotal record), समाज-मितीय आँकड़ें (Sociometric data), समाज-नाटक (socio drama) और अन्य

सामान्य प्रक्षेपी तकनीकें जैसे आत्मकथा, चित्र प्रक्षेपण, कहानी-निर्माण इत्यादि का अभ्यास आजकल बहुत सारी कक्षाओं में किया जाता है। अध्यापक सदैव से ही साक्षात्कार लेते रहे हैं तथा वे विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की शैक्षिक तथा व्यावसायिक सूचना देते रहे हैं। तथापि ऐसा देखा गया है कि अध्यापक प्रायः इन तकनीकों का उपयोग उनकी पूर्ण संभावनाओं का पता लगाए बिना करते हैं। निर्देशन कार्मिक उन्हें इस बात के प्रति पूरी समझ पैदा कर सकते हैं कि इन विधियों का उपयोग कब और कैसे किया जाए तथा उनकी व्याख्या कैसे की जाय।

5. **उपागमों में सादृश्य** -

निर्देशन तथा पाठ्यचर्यात्मक दोनों क्षेत्रों में उपचारी तथा निदानात्मक उपागमों का उपयोग किया जाता रहा है जो परीक्षणों अथवा परीक्षाओं के द्वारा किया जाता है। परन्तु विकासात्मक तथा उपचारी पक्षों पर पूर्ण ध्यान नहीं दिया गया है उदाहरणार्थ, जब कोई विद्यार्थी फेल हो जाता है तो बहुत क्रम अध्यापक इस बात का पता लगाने का प्रयत्न करते हैं कि उसकी असफलता के पीछे कौन से कारण रहे हैं विशेषकर उस अवस्था में जब इसके 'कारण' स्पष्ट रूप से दृश्य न हों। निरोधक (preventive) अथवा निवारक उपागम की पूर्ण संभाव्यता की भी दोनों क्षेत्रों द्वारा उपेक्षा की गई है। प्रायः एक-एक पहलू को लेकर निदान नहीं किया जाता है। ऐसे कितने अध्यापक होंगे जो यह प्रयत्न करते हों कि विद्यार्थियों की समस्याएँ, जैसे -- शैक्षिक असफलता, किसी पाठ्यचर्यात्मक कार्यकलाप में अचानक रुचि कम हो जाना इत्यादि, उत्पन्न ही न हों।

3.3.4 विद्यालयी पाठ्यचर्या द्वारा निर्देशन

प्रत्येक विषय का अध्ययन निर्देशन हेतु कुछ विशिष्ट अवसर प्रदान करता है। जैसे, गणित के अध्ययन से सही और तर्कणापरक चिंतन के विकास के अवसर मिलने चाहिए। सामाजिक अध्ययन, इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शासन सम्मिलित होते हैं उसके द्वारा विद्यार्थियों में वे क्षमताएँ आ जानी चाहिए जिनसे वे आस-पास की निरंतर बदलती दुनिया में अपने-आपको समायोजित कर सकें, तथा दुनिया को दिखा दे कि भ्रष्ट प्रवृत्तियों का मुकाबला वे किस भांति कर सकते हैं। अंग्रेजी भाषा के अध्ययन का विद्यार्थियों के समस्त संप्रेषण कौशलों के विकास को स्पष्ट करेगा तथा उसे अपने-आप को तथा दूसरों को समझने में उसके योगदान को स्पष्ट करेगा। शारीरिक शिक्षा मनोरंजन तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी क्षेत्रों में निर्देशन संबंधी उत्तम प्रकार के अवसर प्रदान करता है। गृह-अर्थशास्त्र अथवा गृह-विज्ञान के अंतर्गत स्वास्थ्य संबंधी तथा वर्तमान तथा भविष्य के पारिवारिक जीवन संबंधी निर्देशन सम्मिलित हो सकते हैं। इसी प्रकार व्यापार शिक्षा, कला तथा विभिन्न कार्यानुभवपरक विषयों में निहित वैयक्तिक तथा व्यावसायिक मूल्यों को देखा जा सकता है, बशर्ते अध्यापक निर्देशन मनस्क (guidance minded) हों।

1. **अंग्रेजी**: मूल्य विकास के अवसर अंग्रेजी की कक्षाओं में सर्वाधिक सुस्पष्ट होते हैं। लघु कथाओं, नाटकों, उपन्यासों, निबंधों तथा कविताओं के द्वारा ऐसी अवस्थितियाँ प्रस्तुत की जा सकती हैं जिनके द्वारा व्यक्ति के प्रयोजन प्रकट हो सकते हैं, समस्याओं का समाधान ढूंढा जा सकता है, तथा निर्णय लिए जा सकते हैं। अंग्रेजी का अध्यापन करते समय निर्देशन का एक महत्वपूर्ण भाग विभिन्न चरित्रों (पात्रों) का अध्ययन है वह हो सकती है कि उन्होंने जैसे व्यवहार किये वे क्यों किये? उनके कृत्यों के परिणाम क्या हुए? कौन से एक जैसे द्वंद्व आज हमारे वास्तविक जीवन में उत्पन्न हो सकते हैं? जीवन की यथार्थतां के लिए साहित्य की बहुत सी अवस्थितियों का उपयोग आज के किशोरों की जटिलताओं पर प्रकाश डालने के लिए किया जा सकता है। इस आधार पर अर्थात् अवस्था मूल्यों (sound values) के विकास में उनकी सहायता की जा सकती है। निर्देशन-मनस्क अध्यापकों का विश्वास है कि साहित्य के अध्यापन में सुदृढ़ मूल्यों का विकास उनका अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है। साहित्य जीवित रहता है, क्योंकि यह अपने अनुशासन तथा कला के माध्यम से जीवन को प्रतिबिंबित करता है।

एक दसवीं कक्षा के लड़के ने निम्नलिखित विषय पर निबंध लिखा कि: "मैं क्या सोचता हूँ कि मैं एक व्यक्ति के रूप में कैसा हूँ?" दूसरे क्या सोचते हैं कि मैं एक व्यक्ति के रूप में कैसा हूँ? मैं क्या सोचता हूँ कि एक व्यक्ति रूप में मैं कैसा व्यक्ति बनना पसंद करूँगा? यह दर्शाता है कि इस प्रकार के आत्म विश्लेषी (अंर्तदर्शी) प्रतिवेदन स्वयं ही विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए कितने आत्मस्वीकृतिपरक (revealing) हो सकती हैं।

"एक व्यक्ति रूप में जैसा मैं अपने आपको समझता हूँ" मैं यह सोचना चाहता हूँ कि दो पैरों के जीव के रूप में मैं सबसे बड़ी चीज हूँ, परन्तु मुझे खेद इस बात का है कि मैं यह जानता हूँ कि मैं ऐसा नहीं हूँ। मैं तो अन्य विद्यार्थियों की भांति एक विद्यार्थी हूँ जिसकी वही सामान्य सी समस्याएँ हैं, कार्यकलाप है और लड़कियों के विषय में वही सर्वसामान्य से विचार हैं। हाँ मेरे अंदर विनोदशीलता बोध पर्याप्त रूप में देखा जा सकता है। मेरी एक विकट समस्या यह है कि मैं उच्च कोटि का सुस्त (आलसी) व्यक्ति हूँ परन्तु जब मेरे माता-पिता का दबाव होता है तो मैं लगभग अपने समस्त कार्य (जो मुझे करने होते है) कर लेता हूँ। लड़के और लड़कियाँ दोनों प्रकार के मित्र मेरे पास पर्याप्त मात्रा में हैं, परन्तु अधिकांश लड़के जिनके साथ मैं घूमता हूँ, मुझ से उम्र में बड़े हैं जिसके कारण मुझे यह अनुभव होता है कि मैं अपनी आयु की तुलना में अधिक परिपक्व हूँ।

"एक व्यक्ति के रूप में जैसा दूसरे मुझे समझते हैं" मेरे विचार में अधिकांश व्यक्ति मेरे विषय में यह सोचते हैं कि मैं ठीक-ठाक हूँ। मैं दिखावा बहुत अधिक करता हँ और कई बार पिछ्ड़ जाता हूँ जिससे दूसरों के विचारों में मेरी प्रतिष्ठा गिर जाती है। न तो लोग मुझे एक नेता ही मानते हैं और न एक अनुयायी ही। वे समझते हैं कि मैं लगभग इन दोनों के बीच में आ सकता हूँ। मेरा अंदाजा है कि लोग मुझे एक समझदार लड़का समझते हैं क्योंकि बहुधा वे अपनी जीवन-गाथा तथा अपनी समस्याएँ मुझे बता देते हैं। मैं मित्र शीघ्र ही बना लेता हूँ परन्तु मेरे कुछ लोग दुश्मन भी हैं। कुछ व्यक्ति ऐसा भी सोचते हैं कि मैं एक मूर्ख हूँ या एक ऐसा लड़का जिसे जब तक भली-भांति जाना नहीं जाता लोग उसे पसंद नहीं करते हैं।

"एक व्यक्ति के रूप में जैसा मैं बनना चाहूँगा" मैं चाहता हूँ कि मैं वैसा ही बना रहूं जैसा वास्तव में मैं हूँ। मेरी यह इच्छा है कि मुझे कुछ कम स्वार्थी होना चाहिए था क्योंकि यह मेरी सबसे बड़ी कमी है। दूसरी बात केवल यह है कि मैं परिश्रमी नहीं हूँ। मैं सरल मार्ग को अपनाना चाहता हूँ। यदि मैं इस प्रवृत्ति को बदल पाता या बदल सकता हूँ तो मैं एक बेहतर व्यक्ति बन सकता हूँ। सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि जो कुछ मैं हूँ उसमें मेरे माता-पिता का काफी हाथ है और उस सब के लिए जो उन्होंने मेरे लिए किया है मैं उनका कृतज्ञ हूँ। मैं यह आशा करता हूँ कि मैं ऐसा व्यक्ति बन जाऊँ जो वे मुझे बनना देखना चाहते हैं।

2. **सामाजिक अध्ययन:** जिस भांति से अधिकांश विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन विषय को पढ़ाया जाता है ऐसा प्रतीत होता है कि उसका विद्यार्थियों द्वारा काफी विरोध किया गया है। इस समस्या से निपटने के लिए अध्यापकों को चाहिए कि वे सर्वप्रथम विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के विषय में उनके नकारात्मक भावों को प्रकट या अभिव्यक्त होने दें। इससे उन्हें यह लगेगा कि अध्यापक उन्हें समझता है, वह उनके दृष्टिकोण की इज्जत करता है और इस बात के लिए कि इस पाठ्यक्रम को उनके लिए किस प्रकार अधिक सार्थक और रुचिकर बनाया जाए, विद्यार्थियों के विचार चाहता है। उसके पश्चात् वह इस बात पर चर्चा कर सकता है कि इस विषय की आवश्यकता क्यों है और अध्यापक ऐसा क्यों सोचता है कि विद्यार्थियों के लिए यह विषय महत्वपूर्ण है।

सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थी यह सीखता है कि "वर्तमान" का विकास भूतकाल से कैसे और किन अवस्थाओं में हुआ और किस भांति वर्तमान (तथा भूतकाल) भविष्य को प्रभावित करते हैं या कर सकते हैं। इसे युवाओं को यह बताने की आवश्यकता है कि भूतकाल में हुई त्रुटियों से भविष्य में कैसे बचा जा सकता है।

विज्ञान की भांति इस से विद्यार्थियों को यह सिखाना चाहिए कि 'तथ्य' तथा 'मत' में किस प्रकार भेद करना चाहिए तथा इसी प्रकार पक्षपात रहित अभिमत को प्रचार (अधिप्रचार) (propaganda) से कैसे भिन्न माना जाए। दोनों विषयों (विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन) का उद्देश्य होना चाहिए कि ये वर्तमान की अनिश्चितताओं का मुकाबला करने में सहायता करें और साथ-साथ शाश्वत मूल्यों के प्रति वचनबद्धता दर्शाएँ।

3. **गणितः** यह मात्र संयोग रहा है कि विश्व के महान दार्शनिक महान गणितिज्ञ भी रहे हैं, जैसे अररस्तु। गणितीय समस्याओं के हल करने में निहित तर्क तथा अनुशासन से व्यक्ति सरलतापूर्वक विश्व के चमत्कारों के विषय में सोच सकता है जो क्रमबद्ध, पूर्वानुमेय तथा तार्किक (logical) प्रतीत होते हैं।

अध्यापक मानव इतिहास में तर्क (logic) और विवेचन (reasoning) के महत्व को दर्शा सकता है; यह बता सकता है कि गणित की भाषा किसी भांति जाति तथा रंग से ऊपर है, किस भांति इसे कौतुक (fun) के रूप में लिया जा सकता है तथा किस भांति इसके द्वारा समस्याओं तथा पहेलियों या उलझनों से निपटा जा सकता है।

बीजगणित के अध्यापन द्वारा अध्यापक विद्यार्थियों को यह अनुभव कराने में सहायता कर सकता है कि गणित एक चिन्हों की भाषा है जिसे शताब्दियों पहले व्यक्ति अपने अमूर्त तथा प्रायोगिक चिंतन को सुगम बनाने के लिए प्रयोग में लाता रहा है। विद्यार्थी इस बात में भी रुचि दर्शाएँगे कि आज बाह्य अंतरिक्ष पर विजय पाने के प्रयत्नों में गणित की भूमिका क्या रही है।

4. **सभी विषयों में निहित वैयक्तिक तथा सामाजिक मूल्यः** कोई भी विषय, चाहे वे कला, संगीत, व्यवसाय अध्ययन, शिक्षा या गृह विज्ञान जैसे शैक्षिक विषय ही क्यों न हो, किसी साध्य के साधन के रूप में ही होते हैं। इनके अध्ययन से व्यक्ति तथा मानव को एक श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए सहायता मिलती है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे प्रत्येक विषय को अपने सामाजिक एवं वैयक्तिक विकास से तथा मानव जाति के दीर्घकालीन लक्ष्यों से संबंधित करके देखें।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना कीजिए।

1. एक संगत तथा सार्थक पाठ्यचर्या के तीन मानदंड लिखें।

....

....

....

....

2. बताइए कि नीचे लिखे कथन सत्य हैं अथवा असत्य।

क) पाठ्यचर्या एक विषय-केन्द्रित उपागम से एक विद्यार्थी-केन्द्रित उपागम की ओर अग्रसर हो गई है।

ख) निर्देशन एवं पाठ्यचर्या के समाकलन (संघटन) की कोई आवश्यकता नहीं है।

ग) विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताओं को सरलता से पहचाना जा सकता है।

घ) प्रत्येक विद्यालयी विषय के शैक्षिक तथा व्यावसायिक निहितार्थ होते हैं।

3. नीचे दिए गए शब्दों का मेल दूसरे स्तंभ में दिए उनके अर्थों के साथ करें।

	शब्द		**उनके अर्थ**
i)	पाठ्यचर्या	क)	पुरस्कार
ii)	प्रबलन	ख)	मूल्यांकन
iii)	विशिष्ट आवश्यकताएँ	ग)	सुनियोजित अधिगम अनुभूतियाँ
iv)	निर्धारण	घ)	विशिष्ट/सामान्य आवश्यकताएँ

4. संक्षिप्त रूप में व्याख्या कीजिए।

क) निर्देशन आधार बिंदु से पाठ्यचर्या का अर्थ

....

....

....

ख) समग्र व्यक्ति की आवश्यकताएँ

....

....

....

....

ग) अंग्रेजी विषय के द्वारा निर्देशन

....

....

....

5. रिक्त स्थानों को भरें।

क) विद्यार्थी (बच्चे) अपने समस्त .... से सीखते हैं और मात्र उनसे ही नहीं जो कक्षा में प्राप्त किए जाते हैं।

ख) एक अर्थ में विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ विद्यालयी क्रियाकलापों की .... निर्धारित करती हैं।

ग) पाठ्यचर्या का विकास .... प्रक्रिया के सामंजस्य में करना चाहिए।

घ) गृह विज्ञान .... तथा .... में निर्देशन प्रदान कर सकता है।

6. निम्नलिखित में से प्रत्येक कथन के लिए एक शब्द लिखिए।

i) पाठ्यचर्यात्मक कार्यकलापों के अतिरिक्त विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय में प्राप्त अधिगम अनुभव।

ii) निर्देशन और पाठ्यचर्या दोनों में केन्द्रिक प्रकार्य बिन्दु (Focal functional point)।

3.4 निर्देशन तथा अधिगम

एक निर्देशन आधारित पाठ्यचर्या में अधिगम प्रक्रिया की प्रकृति, अध्येता, अधिगम अवस्थिति, अध्यापक तथा निर्देशन परामर्शदाता (उपबोधक) महत्वपूर्ण कारक होते हैं। अध्यापक तथा उपबोधक (counsellors) को यह ज्ञान अवश्य होना चाहिए कि बच्चे और अन्य व्यक्ति किस भांति सीखते हैं।

हमारे शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक इतिहास के प्रारंभ में अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में स्मृति को महत्वपूर्ण घटक माना जाता था। परन्तु अब यह देखा गया है कि अधिगम अनुभव के आधार पर व्यवहार में परिवर्तन प्राप्त करने का मामला है न कि मुख्यतः स्मृति द्वारा ज्ञान संग्रहण।

"हम कैसे सीखते हैं" इस समस्या से संबंधित प्रयोगात्मक अन्वेषण लगभग 100 वर्ष से चलते आ रहे हैं। मनोविज्ञान के विभिन्न संप्रदायों ने प्रयोगों के आधार पर अधिगम के सिद्धान्तों का निर्माण किया है जो इस प्रकार हैः अनुक्रियाओं के अनुबंधन द्वारा अधिगम, प्रयत्न-त्रुटि अधिगम, तथा अंतर्दृष्टि द्वारा अधिगम। अभिनव अध्ययनों ने प्रत्यक्षीकरण द्वारा अधिगम को चिंतन द्वारा अधिगम को, करके सीखने को तथा सृजनात्मक अधिगम को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वास्तविक जीवन स्थितियों में अधिगम सभी प्रमुख सिद्धान्तों के कुछ पक्षों को प्रतिबिंबित करता प्रतीत होता है।

3.4.1 अधिगम प्रक्रिया की प्रकृति

अनिवार्य रूप से अधिगम लक्ष्य-निर्देशित होना चाहिए। यह इसलिए कि अध्येता निरंतर अपने व्यवहार में परिवर्तन दर्शाता रहता है। "ये परिवर्तन किस प्रकार घटित होते हैं और इनकी दिशा किस ओर होती है?" यह प्रश्न निर्देशन कार्यक्रम के लिए एक सीधी चुनौती है।

1. **अधिगम के लक्ष्यः** प्रभावी अधिगम एक संगठित (अनुक्रमिक) प्रक्रिया होती है, जो सरल से जटिल की ओर चलती है। इस प्रकार पहले से ही एक 'दिशा' विन्यास (direction set) विद्यमान रहता है। अतः कक्षा आरंभ करने से पूर्व अध्यापक यह निश्चित करता है कि उसे उस दिन क्या पढ़ाना है। कक्षा के उपरांत वह विद्यार्थियों को बताता है कि इस प्रकरण से किस प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं तथा उन पर वह विद्यार्थियों से चर्चा करता है।

2. **अधिगम एक एकीकृत प्रक्रिया हैः** चूँकि निर्देशन में वृद्धि और विकास का लक्ष्य निहित होता है अतः निश्चय ही इसके अंतर्गत मन तथा शरीर संबंधी द्वैतवाद की समस्या पर विचार किया जाता है। शोधों के आधार पर यह स्पष्ट हो चुका है कि जब भी बच्चा कोई अनुक्रिया करता है तो उसके व्यक्तित्व के ये दोनों पक्ष - बौद्धिक व शारीरिक - कार्य करते हैं। उदाहरणार्थ - किसी गेंद के फैंकने में तार्किक चिंतन की आवश्यकता पड़ती है तथा साथ ही शारीरिक समन्वय की भी (हाथ और बाजुओं को एक दिशा विशेष में हिलाना)। इसी प्रकार अंकगणित के किसी पहाड़े को पक्का करने के लिए रटंत स्मृति (rote memory) की आवश्यकता होती है (इसे बार-बार दोहराने तथा लिखने और बोलने के लिए विशेष योग्यता का प्रयोग करना)।

3. **अनुभव व अधिगमः** अनुभव गहन रूप से एक व्यक्तिगत मामला है जो हमारी आस्थाओं और अभिवृत्तियों को प्रभावित करता है। प्रत्येक विद्यार्थी कक्षा में अपने अनुभव लेकर आता है। उन अनुभवों के आधार पर उसे आगे नए अनुभवों को प्राप्त करना होता है। यह इन अनुभवों का योग है जो अधिगम प्रारूपों का निर्माण करता है। अतः यदि एक अध्यापक बच्चों की यथा स्थिति (अर्थात् जैसे भी वे हैं) को स्वीकार कर उसी के अनुसार बच्चे के साथ चले तो यह सर्वोत्तम निर्देशन परंपरा का निवर्हन होगा।

4. **अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधारः** यद्यपि यह बात अभी तक पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं हो पाई है कि अधिगम प्रक्रिया में मानव तंत्रिका तंत्र किस भांति कार्य करता है, तथापि इसके लिए पर्याप्त साक्ष्य प्रतीत होते हैं कि मानव मस्तिष्क ही अधिगम का स्थान है। वास्तव में बहुत

सी अधिगम अपंगताएँ जैसे कि पठन वैकल्य (dyslexia), अवस्तरीय उपलब्धि (underachievement), निम्न उपलब्धि (poor achievement), मंदग्राहिता (Slow learning) इत्यादि की व्याख्या मस्तिष्क की अपक्रिया (malfunctioning) के आधार पर की जा सकती है।

5. **अधिगम में संवेगः** तनावयुक्त काल, सुख, प्रसन्नता या बाधा की स्थिति से अधिगम प्रभावित होता है। अध्यापक अपने व्यक्तित्व से कक्षा में सांवेगिक वातावरण का निर्माण करता है। प्रभावी अधिगम सुसंमजित अध्यापकों तथा विद्यार्थियों पर निर्भर करता है। यदि अध्यापक और विद्यार्थी दोनों प्रसन्न मुद्रा तथा विश्वास के साथ कक्षा में आते हैं तो स्वतः ही प्रभावी अधिगम का वातावरण तैयार हो जाता है; और यदि इनमें कोई भी उद्विग्न या दुःखी है तो उससे प्रभावी अधिगम में बाधा आनी स्वाभाविक होगी।

6. **अधिगम तथा आत्मधारणा (Self concept)**: चूँकि अधिकांश रूप में व्यवहार उन लक्ष्यों की ओर अभिमुख या निर्देशित होता है जो व्यक्ति के लिए उसकी आवश्यकताओं की संतुष्टि के संदर्भ में महत्वपूर्ण लगते हों। व्यक्ति जिस भांति अपने लक्ष्यों की व्याख्या करता है तथा उनकी प्राप्ति के लिए जिन विधियों को स्वीकार करता है, वे अधिगम प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। उदाहरणार्थः सोलह वर्ष की आयु में विपुल अपने जीवन में एक ऑटोमोबाइल (कार, गाड़ी आदि) के स्वामित्व को प्राप्त करना सर्वाधिक महत्व की चीज मानता है। इस तरह की किसी गाड़ी को प्राप्त करने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार है, चाहे उसे उसके निर्माण के लिए अलग-अलग भाग चुराने ही क्यों न पड़ें। अपनी आवश्यकताओं की व्याख्या तथा उनकी संतुष्टि कैसे की जाए यह बात उसके अधिकांश अधिगम को प्रभावित कर देगी। रॉजर्स के अनुसार व्यक्ति के आंतरिक निर्देश-आधार (internal frame of reference) या संदर्भ विन्यास अर्थात् उसकी आत्मधारणा को उसकी अधिगम प्रक्रिया में सहायता प्रदान करने के लिए समझना चाहिए, चाहे यह सामूहिक शिक्षण (अनुदेशन) का मामला हो अथवा व्यक्तिगत उपबोधन (counselling) का।

3.4.2 अधिगम सामग्री तथा अध्यापक का महत्व

अधिगम मात्र अध्येता के प्रयासों पर ही निर्भर नहीं करता अपितु जो कुछ वह सीखता है उसके संगठित प्रस्तुतीकरण पर भी निर्भर करता है। दूसरे शब्दों में, अधिगम प्रक्रिया में अध्यापक की एक सार्थक भूमिका होती है।

भूतकाल में निर्देशन कार्यक्रमों में अध्यापक की भूमिका की अवहेलना की जाती रही है। तथापि अब यह स्पष्ट हो गया है कि विद्यालय में मात्र निर्देशन-विशेषज्ञ ही निर्देशन कार्यक्रमों का संचालन नहीं कर सकते। यह अध्यापक ही है जो विषयवस्तु की व्यवस्था करता है, अधिगम पथ को निदेशित करता है और उन लक्ष्यों की व्याख्या करता है जो उसके लिए निर्धारित किए गए हैं।

1. **संगठित प्रविधियों की आवश्यकताः** यदि अपेक्षित अधिगम को सुनिश्चित करना है तो कक्षा प्रविधियों की क्रमबद्ध व्यवस्था करना आवश्यक है। अतः कक्षा जिसमें प्रारंभिक विद्यार्थी हैं अध्यापक को उस प्रकार के अनुभवों का वरण करना होगा जो विद्यार्थी को शिक्षा देने के लिए अभिकल्पित किए गए हैं। उदाहरण के लिए, यह निश्चय करने के पश्चात् कि कौन सा प्रकरण पढ़ाना है, अध्यापक पहले उस समस्त अध्याय (इकाई) का सारांश प्रस्तुत करेगा और तब उस पाठ की प्रस्तावना आरंभ करेगा।

2. **अधिगम तथा प्रभावी कार्य करने संबंधी आदतः** कक्षा से बाहर जाने के पश्चात् विद्यार्थी को क्या होता है? अर्थात् कक्षा से बाहर भी विद्यार्थी की अधिगम संबंधी वास्तविक आवश्यकताएँ रहती हैं जिन्हें प्रभावी कार्य संबंधी आदतों की स्थापना कहा जा सकता है।

   हमारा लक्ष्य एक सुसमायोजित व्यक्ति का निर्माण है। परन्तु विद्यार्थियों को यह समझाने की आवश्यकता भी है कि अधिगम मात्र एक खेल नहीं है। इसके लिए एकाग्र प्रयासों व परिश्रम के द्वारा विषयवस्तु में प्रवीणता, अभिरुचि तथा घर पर पढ़ने के एक निश्चित

कार्यक्रम की आवश्यकता होती है। समस्या यह है कि अधिगम में रुचि तथा अनुशासन में संतुलन कैसे रखा जाए। इसे हम अगले प्रकरण में दर्शाएंगे।

3. **कक्षा अनुशासन के लिए सुझावः** कक्षा में अनुरक्षित (maintained) अनुशासन के मूल्यांकन की सर्वाधिक प्रभावी विधि स्वयं विद्यार्थियों से ही प्राप्त होता है।

   वाल्टर महोदय ने कक्षा में उत्तम अनुशासन बनाए रखने के लिए कुछ सुझाव दिए हैं जो निम्नांकित हैं:

   i) सारे दिन के कार्य को पहले से ही नियोजित कर लें।

   ii) आश्वस्त हों कि प्रदत्त कार्य (assignments) को विद्यार्थी जानते हैं

   iii) लिखित कार्य की एक समय सीमा निर्धारित करें

   iv) विद्यार्थियों के साथ अपने व्यवहार में निश्चित व दृढ़ रहें: 'मेरा आशय कार्य से है' कार्य में दृढ़ता से।

   v) विद्यार्थियों से काफी पहले अपनी कक्षा में होवें।

   vi) अपनी कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी में अभिरुचि विकसित करें।

   vii) ग्रेड के मामले में यक्षपात और आग्रह मुक्त होकर सुनिश्चित रहें तथा विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत लिखित कार्य को उन्हें शीघ्र वापस करें।

   viii) इस बात के लिए सुनिश्चित रहें कि आप कुछ विद्यार्थियों के साथ पक्षपात तो नहीं कर रहे हैं। पक्षपात करने से कक्षा के विद्यार्थियों का मनोबल गिर जाता है।

   ix) अपनी कक्षा को नियंत्रित करने की योजना बनाएँ। केवल अंतिम विकल्प के रूप में ही दोषी विद्यार्थियों को उप-प्रधानाचार्य अथवा प्रधानाचार्य के पास भेंजे। अपनी कक्षा के सभी मामलों का स्वयं निपटारा करने का प्रयास करें।

   x) बहुत तीखी टीका-टिप्पणी (कठोर) न करें। और सुनिश्चित करें कि जो टिप्पणी आपने की है उसका आय प्रतिवाद (defence) कर सकते हैं।

3.4.3 अध्येता का महत्व

एक मूलभूत समस्या, जिसका सामना शिक्षा को करना होता है, वह उन विद्यार्थियों के निर्देशन में आती है जो किसी न किसी कारण से स्वीकार्य मानदंडों से भिन्न रूप में व्यवहार करते हैं। अतः अध्यापक को सदैव यह ध्यान में रखना चाहिए कि विद्यार्थियों की अनुक्रियाएँ अपने आप में प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अपने ढ़ंग की होती है - कभी भी एक ही प्रकार की नहीं होती।

एक सफल अध्यापक को अपने कौशलों तथा अपनी समझ का उपयोग करते हुए एक ऐसी व्यापक प्रविधि बनानी होगी जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं का समावेश हो जाए। एक अपंग विद्यार्थी का व्यवहार अन्य सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में भिन्न हो सकता है जबकि उसकी मूल अभिवृत्ति वही हो सकती है। दूसरी ओर ऊपरी रूप से दो सामान्य दीखने वाले विद्यार्थियों में जीवन के प्रति दृष्टिकोण में अत्यधिक अंतर हो सकता है। जब अध्यापक यह अनुभव कर लेता है कि किसी अवस्था विशेष में विशिष्ट सहायता की आवश्यकता है तो ऐसे विद्यार्थियों को वह एक वृत्तिक उपबोधक (परामर्शदाता) (career counsellor) के पास भेज सकता है।

बच्चे प्रायः अपने बारे में, अपने घरों के बारे में, अपने मित्रों और अभिरुचियों के बारे में आपस में बातचीत करना पसंद करते हैं। इनमें से बहुत से विद्यार्थी अध्यापक को अपने माता-पिता के समान मानते हैं जिन्हें वे अपने लिए विश्वसनीय समझते हैं। बच्चों के साथ सामान्य बातचीत के दौरान भी अध्यापक बच्चों के विषय में या उनकी अभिवृत्तियों के विषय में काफी कुछ जान सकते हैं।

अध्यापकों तथा उप-बोधकों (counsellor) के लिए निर्देश

1. **प्रत्येक विद्यार्थी से उच्चतम अपेक्षा रखें:** अधिकांश विद्यार्थी उससे कहीं अधिक कर सकते हैं जितनी अपेक्षा प्रौढ़ो (वयस्कों) को उनसे होती है। अध्यापक को विद्यार्थियों के लिए वह सब नहीं करना चाहिए जो वे (विद्यार्थी) अपने लिए स्वयं करने में सक्षम हैं। उदाहरण के लिए, यदि अध्यापक ने किसी अभ्यास प्रश्नावली के प्रश्नों को हल करने लिए उदाहरण सहित सूत्र पढ़ा दिया है तो उसे उस प्रश्नावली को श्यामपट्ट पर हल नहीं करना चाहिए।

2. **प्रत्येक विद्यार्थी को प्रोत्साहित कीजिए:** प्रोत्साहन से आशय वह नहीं है जो पुरस्कार अथवा प्रशंसा से है। पुरस्कार और प्रशंसा की यह अति होगी यदि अध्यापक उन सभी अभ्यास कार्यों पर जिनमें सभी प्रश्न ठीक से हल किए हों, "अच्छा है," "बहुत अच्छा" लिखता चला जाए। इस प्रकार की प्रशंसा करने से "प्रशंसा" शब्द मूल्यहीन हो जाएगा। दूसरी ओर यदि अध्यापक कुछ चुने हुए अभ्यास कार्यों पर "अच्छा" शब्द का प्रयोग करे तथा साथ अपनी टिप्पणी प्रस्तुत करे कि इसमें क्या "अच्छाई" निहित है (जैसे: बहुत व्यवस्थित ढंग से कार्य किया गया है या बड़ा साफ सुथरा कार्य है), तो ऐसी प्रशंसा अधिक प्रोत्साहित करने वाली होगी।

3. **सुने अधिक:** बहुत से अध्यापक स्वयं बहुत अधिक बोलते रहते हैं। यही कारण है कि कुछ विद्यार्थी अध्यापक - बधिर (उदासीन) (teacher deaf) हो जाते हैं। विद्यार्थी यह भली-भांति जानते हैं कि अध्यापक बहुत बार व्यर्थ में व्याख्या करते रहते हैं और समय नष्ट करते रहते हैं। बहुत बार वे कक्षा को डांटते रहते हैं। एक बच्चे ने कहा "हमारी हिंदी की अध्यापिका हमें इतनी बार डांटती रहती हैं कि पढ़ाने के लिए उसके पास समय ही नहीं बचता"।

4. **इस बात को समझने का प्रयत्न कीजिए कि बच्चा अपने व्यवहार को किस रूप में लेता है या समझता है:** बच्चा अपने व्यवहार से क्या प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है? वह (व्यवहार) उसे कितना परितोष या संतुष्टि प्रदान कर रहा है? कई बार कोई विद्यार्थी समकक्ष समूह द्वारा अनुमोदित होने के लिए मूर्खों जैसी टिप्पणी कर सकता है। अध्यापक की आज्ञा का उल्लंघन कर सकता है या बातें करना बंद नहीं करता: इस प्रकार का उसका व्यवहार अवधान को आकर्षित करने, अपनी पहचान कराने, यह अनुभव कराने कि समूह में उसकी एक भूमिका है, चाहे वह नकारात्मक ही क्यों न हो अथवा उससे किसी को भी सहायता न मिलती हो, का एक तरीका है।

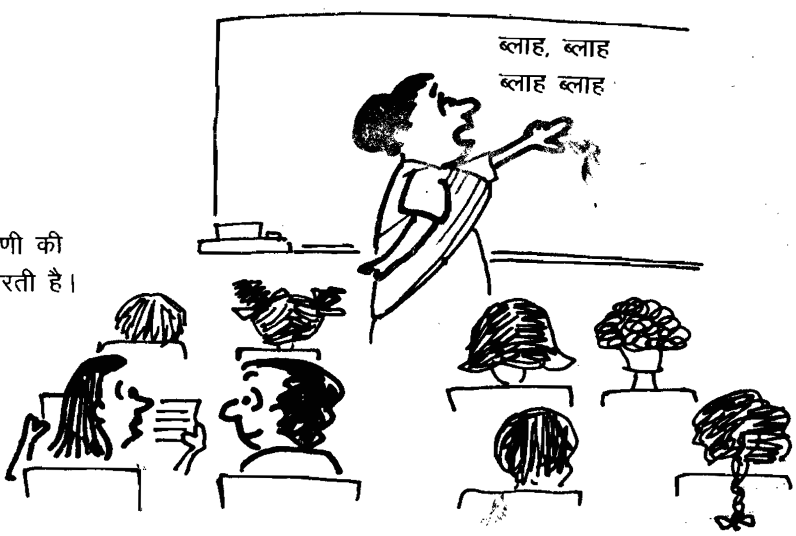

वे अपनी ही वाणी की ध्वनी से प्यार करती है।

5. **निम्नलिखित तीन बातों का बोध प्राप्त करने का प्रयत्न करें:**

   1) **बच्चे को समझना** - उसकी अभिक्षमता, उसके मूल्य, लक्ष्य, उसका व्यक्तित्व, पूर्व ज्ञान, सामान्य अनुभव, तथा शारीरिक अवस्था।

2) **कार्य को समझना** - कितना रुचिकर है, कितना कठिन है और इसकी उपयोगिता कितनी है?

3) **अवस्थिति** - बच्चे की अपने समकक्ष समूह के साथ अन्योन्य क्रिया तथा उसका अध्यापक के साथ संबंध, समूह की अभिवृत्ति और उसका मनोबल, अभिप्रेरणा, चिंता तथा स्थिति में निहित दबाव, निकटस्थ कार्य परिवेश - प्रकाश व्यवस्था, संवातन (ventilation) या वायु संचार, अन्यमनस्कता या विकर्षण (absent mindedness)।

3.4.4 कक्षा अधिगम तथा निर्देशन में निहित मनोवैज्ञानिक कारक

विद्यार्थियों के विषय में जानना तथा उनकी इस प्रकार सहायता करना ही कि वे स्वयं सीख सकें, निर्देशन का आधार है। कुछ ऐसे सिद्धान्त ढूढें गए हैं जो इस प्रकार की स्थिति प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुए हैं जिससे कक्षा अधिगम में सुगमता आती है।

1) **अभिप्रेरणाः** अधिगम उस अवस्था में प्रभावी रूप से घटित होता है और इसके स्थाई रहने की अधिक संभावना होती है जबकि स्वयं अध्येता को उस कार्यकलाप के एक घटक होने की अनुभूति करा दी जाए। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो इंजीनियर बनना चाहता है, उस समस्त ज्ञान को प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न करेगा जो उसकी आकांक्षा की पूर्ति से जुड़ा हो। अभिप्रेरणा से व्यक्ति स्वतः प्रोत्साहित रहता है, बशर्ते उस क्षेत्र विशेष में व्यक्ति कुछ अभिक्षमता रखता हो।

2) **परिपक्वता के स्तरानुसार समायोजनः** जब कोई व्यक्ति कोई नया कौशल सीखना चाहता हो, जैसे किसी बेसबाल को फैंकना, अथवा किसी शास्त्रीय (क्लासिक) नृत्य का नया सोपान, तो उस कार्य के लिए उसका पर्याप्त रूप में परिपक्व होना अनिवार्य है। यह आवश्यक है कि विद्यार्थी को स्वयं अपनी योग्यताओं तथा सीमाओं का बोध हो। इस सिद्धान्त में दो अवधारणाएँ निहित हैं: 1) अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थी पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ न डाले (अति जमाव की स्थिति - over concentration)। 2) अधिगम उस अवस्था में सर्वाधिक प्रभावी होगा जबकि विद्यार्थी द्वारा किए जाने वाले कार्यकलाप के संपादन में कार्य तथा विश्राम का सम्यक् वितरण हो (कार्य करने की अवधि बहुत लंबी न हो)।

   अतिधारणा या जमाव तथा कार्य करने की लंबी अवधि दोनों ही अधिगम को हानि पहुँचाती है।

3) **अभिरचना (pattern) अधिगमः** किसी उद्देश्य की अभिरचना जितनी अधिक स्पष्ट रूप से समझी जाएगी, अधिगम उतना ही अधिक स्थाई बन सकता है। विद्यार्थी जो एक दिन वकील बनने की आशा रखता है अपने सभी विषयों की सार्थकता को इसी नजरिये से देखने का प्रयत्न करेगा। उदाहरणार्थः वाद-विवाद तथा नागरिक शास्त्र जैसे विषयों में उसकी रुचि अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक होगी। इसी प्रकार भाषा में काल तथा विराम चिन्हों का कोई अर्थ नहीं होगा जब तक कि इन के उपयोग की सार्थकता दैनिक जीवन में बोली जाने वाली भाषा में भली-भांति समझ नहीं ली जाती।

4) **प्रगति मूल्यांकनः** विद्यार्थियों को विद्यालयी कार्यकलापों में सफलता (या उसके अभाव) की चिंता बनी रहती है। अतः अधिगम उस अवस्था में अधिक प्रभावी होगा जबकि अध्येताओं की प्रगति का मूल्य-निर्धारण किया जाता रहे। एक अध्येता को यह जानने की आवश्यकता रहती है कि क्या उसे अपने कार्य को जारी रखना चाहिए या गति को विराम देकर कार्य का पुनरीक्षण किया जाए। मूल्यांकन निर्देशन का सकारात्मक रूप हो सकता है तथा ऐसा होना भी चाहिए। ऐसे बहुत कम विद्यार्थी होंगे जो अपनी सफलता अथवा असफलता के प्रति अनुक्रिया नहीं करते हैं।

5) **व्यापक समाकलित (संघटित) विकासः** शिक्षा के प्रत्येक पक्ष का संबंध अध्येता के विकास से होता है। विद्यालय कार्य में निपुणता या प्रवीणता प्राप्त कर लेने मात्र से भविष्य के नागरिकों का व्यक्तित्व परिपक्व नहीं बन सकता है।

वे विद्यार्थी जो कौशल और योग्यताओं को प्राप्त कर पाते हैं उनका आत्मविश्वास तथा सामाजिक संतुलन बढ़ जाता है उनमें दृढ़ता व निर्भयतापूर्ण ढंग से कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता का विकास हो जाता है। यह मालूम होना चाहिए कि बच्चों के निर्माणात्मक काल में उनके व्यक्तित्व का समाकलित विकास विद्यार्थियों के अधिक परिपक्व व्यक्तित्व में रूपांतरित करने में काफी सहायक होगा (देखें आकृति 3.1)

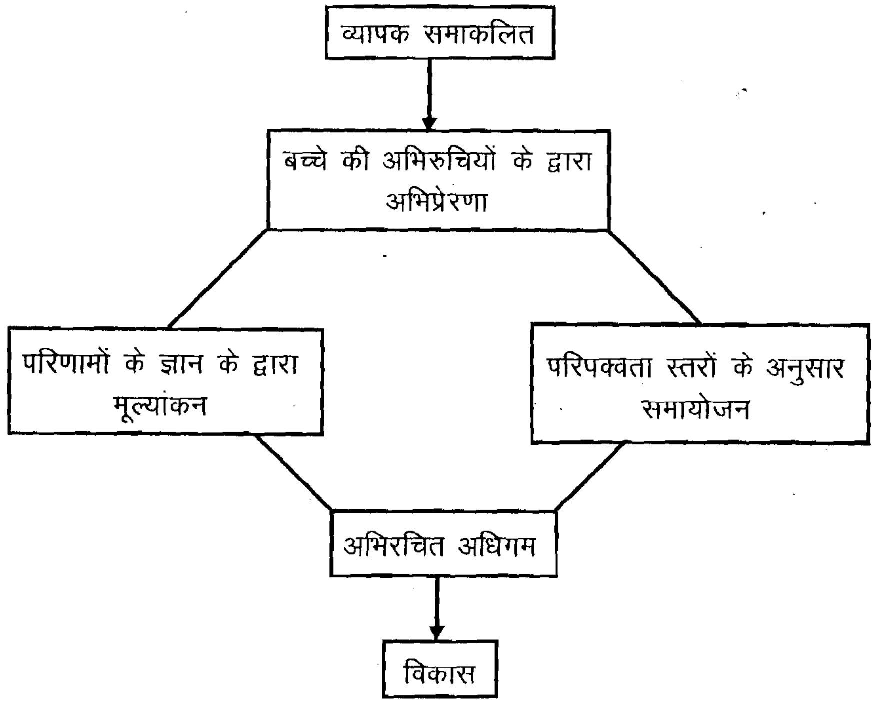

चित्र 3.1 अधिगम के समाकलित सिद्धान्त (थॉर्प, 1995)

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना कीजिए।

7. निम्नलिखित कथनों को "सत्य" और "असत्य" दो श्रेणियों में वर्गीकृत कीजिए।

क) प्रभावी अधिगम एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है जो जटिल से सरल की ओर चलती है।

ख) अधिगम अध्येता के प्रयासों के अतिरिक्त अधिगम सामग्री तथा अध्यापक पर निर्भर करता है।

ग) जब कोई विद्यार्थी किसी नए कौशल को सीखता है तो यह आवश्यक है कि वह उस कार्य को करने या सीखने के लिए पर्याप्त रूप में परिपक्व हो।

8. सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर को चुनिए।

अधिगम में दोनों निहित हैं

i) अभिप्रेरक तथा संवेदनाएँ

ii) स्वः तथा अन्य व्यक्ति

iii) मन तथा शरीर

9. निम्नलिखित में संबंधित पदों का प्रधान पदों से मिलान कीजिए।

प्रधान पद	संबंधित पद
i) अधिगम	क) मन तथा शरीर
ii) द्वैतवाद	ख) प्रशंसा
iii) कार्य करने संबंधी आदतें	ग) परिवर्तन
iv) प्रोत्साहन	घ) अनुसूची

10. निम्नलिखित में मनोवैज्ञानिक कारकों के अंतर्गत दिए गए मदों का मिलान उनके प्रभावों से कीजिए।

मनोवैज्ञानिक कारक	प्रभाव
i) अभिप्रेरणा	क) शारीरिक तथा मानसिक योग्यताओं के द्वारा
ii) मूल्यांकन	ख) बच्चे की रुचियों के द्वारा
iii) परिपक्कवन	ग) दैनिक व्यवहार में प्रयोग के द्वारा
iv) अभिरचित अधिगम	घ) उपयुक्त समय पर दी गई प्रतिपुष्टि के द्वारा

3.5 निर्देशन तथा अनुशासन

यह बात सुस्पष्ट है कि अनुशासन के बिना अध्यापक अपने कार्य में सफल नहीं हो सकते हैं तथा विरोधाभास रूप में अनुशासन एक ऐसा मामला है जिसका अनुभव हमें उस समय अधिक होता है जब इसका अभाव हो, न कि जब यह विद्यमान हो। हमें विदित है कि बिना अनुशासन के अध्यापन एक थकान पैदा करने वाला हताशापूर्ण, निराशाजनक तथा असंभव सा कार्य लगता है। परन्तु वह पकड़ में न आने वाला (elusive) कौन-सा गुण कौन-सा है जिसे कुछ (भाग्यशाली) अध्यापक लगभग मान कर चलते हैं।

आइए, जरा देखें कि कुछ अध्यापक अनुशासन को किस भांति परिभाषित करते हैं: 1) यह आत्मनियंत्रण तथा क्रमबद्ध व्यवहार विकसित करने का प्रशिक्षण है। 2) यह सत्ता की स्वीकृति या उसकी अधीनता या नियंत्रण स्वीकार करना है। 3) यह एक ऐसा व्यवहार है जो सुधारात्मक है या दण्डात्मक है।

परन्तु अनुशासन की उपर्युक्त परिभाषाओं में कुछ अस्पष्टता और लुप्त है। जो लुप्त हैं वह है अनुशासन का शैक्षिक तथा निर्देशन घटक। इस दृष्टि से कि अनुशासन कक्षा स्थिति में प्रभावी हो सके इसके लिए इसका शिक्षा तथा निर्देशन से जुड़ना अनिवार्य है।

अनुशासन स्वयं में कोई ध्येय या साध्य नहीं है, यह तो विद्यार्थियों को यह समझाने का साधन है कि जो वे सीखना चाहते हैं उसका उनके व्यवहार से संबंध होता है। अतः हम नहीं चाहेंगे कि हमारे विद्यार्थी सत्ता की अधीनता मात्र डर से स्वीकार करते रहें। हम चाहते हैं कि उनका व्यवहार नियमों और सिद्धान्तों, आदर्शों तथा दूसरों के प्रति सद्भावना पर आधारित हो।

3.5.1 कक्षा अनुशासन तथा निर्देशन विधियाँ

प्रभावी अध्यापक यह जानते हैं कि प्रतिबंध लगाने की तुलना में कक्षा अनुशासन शिक्षा के लिए अधिक मूलभूत साधन होता है। प्रविधि की दृष्टि से लोकतांत्रिक भी हो सकता है तथा स्वेच्छाचारी भी। दूसरी बात यह है कि अनुशासन के लिए समस्त शिक्षकगण को उत्तरदायित्व लेना चाहिए।

विद्यार्थी के हित में सर्वोत्तम क्या हो सकता है, इस मामले में कक्षा अध्यापक विशेष रूप से संबंधित होता है। इसका अर्थ है कि कक्षा अध्यापक को यह निश्चय करने में निर्णायक भूमिका निभानी पड़ेगी कि उसके विद्यार्थियों के लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। अच्छे अधिगम के अनुकूल वातावरण बनाए रखने के लिए उसे चाहिए कि विद्यालय के नियम लागू करे और उन विद्यार्थियों के कार्यकलापों को प्रतिबंधित करें जो अपने-आप को अनुशासन में नहीं रख सकते।

कार्य करने के लिए सबसे अच्छा वातावरण उस अवस्था में विद्यमान रहेगा जब कक्षा अध्यापक अपने विद्यार्थियों को विद्यालय के नियम-अधिनियमों से अवगत कराता रहे, तथा यह स्पष्ट करे कि इन नियमों का क्या औचित्य है, अर्थात् इन्हें क्यों बनाया गया है इसके साथ ही यह समझने में उनकी सहायता करें कि इन नियमों आदि को लागू करने में वे अपना वैयक्तिक दायित्व कैसे अनुभव करें।

अनुशासन संबंधी समस्याओं के निर्वाह में निर्देशन विधियाँ

अनुशासन संबंधी समस्याओं के निर्वाह में निर्देशन विधियों का प्रयोग काफी प्रभावी हो सकता है। संभवतः अनुशासन के क्षेत्र में निर्देशन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान 'बाल अध्ययन तकनीकों' का प्रयोग है। वे सभी व्यक्ति जो अनुशासन संबंधी समस्याओं से सरोकार रखते हैं, उन्हें बच्चे की आवश्यकताओं तथा रुचियों से उसकी घर की पृष्ठभूमि से और उसके विद्यालय संबंधी निष्पादन के विभिन्न पक्षों से अवगत होना चाहिए। इन सबका ब्यौरा संचयी अभिलेखों से और 'केस कांफ्रैंस' से प्राप्त किया जा सकता है। उन सभी कारकों का ज्ञान जिन्होंने बच्चे के व्यक्तित्व को एक रूप प्रदान किया है अर्थात्, जीवन के प्रति उसकी अभिवृत्तियों का निर्माण किया है, अध्यापक के कार्य को आसान और लाभकारी बना सकता है।

अनुशासन संबंधी समस्याओं के निर्वाह के लिए निर्देशिका

क्योंकि अध्यापक/उपबोधक को इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना होता है अतः वह स्वयं से तथा बच्चे से पर्याप्त रूप में अवगत हो जाता है और बच्चे के अनापेक्षित और अस्वीकार्य (inacceptable) व्यवहार के कारणों का पता लगा सकता है।

इसके लिए अध्यापक को निम्नलिखित प्रकार के प्रश्नों को ध्यान में रखना चाहिए और उनका उत्तर ढूंढना चाहिए।

1. अंतिम बार जब बच्चे ने मेरी उपस्थिति में दुर्व्यवहार किया था जो उसने क्या किया था?
2. उस घटना से अलग जिसमें अनुशासन संबंधी समस्या उत्पन्न हुई, मेरा उस बालक के विषय में क्या विचार है?
3. अंतिम बार जब बच्चे ने मेरी उपस्थिति में दुर्व्यवहार किया तो मैने उसके साथ कैसे व्यवहार किया था।
4. क्या मेरे पास उसकी सामान्य स्वास्थ्य अवस्था, उसके भोजन तथा उसकी रहन-सहन संबंधी अवस्थाओं के बारे में कोई जानकारी है?
5. क्या मुझे ऐसी किसी ऐसे कारण का ज्ञान है जो उसे तंग कर रहा है?
6. उसके परिवार के सदस्य परस्पर एक दूसरे के प्रति कैसा अनुभव करते हैं?
7. एक समूह के रूप में एक परिवार के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण क्या हो सकती/सकता है?
8. बच्चा घर पर कैसे अनुशासित रहता है? घर में लगे प्रतिबंधों के विषय में वह कैसे अनुभव करता है तथा इन प्रतिबंधों को लागू करने की विधियों के विषय में उसके क्या विचार हैं?
9. क्या बच्चे को पता था कि मेरी उससे तथा उसके समकक्ष बच्चों से क्या प्रत्याशाएँ थी?
10. अपने सहपाठियों के मध्य बच्चा अपने आपको कैसा आंकता है? उसके मित्र कौन हैं?

11. मेरी कक्षा में कार्यात्मक अवस्थाएँ कैसी हैं?

12. बच्चे के विद्यालयी कार्य का स्तर क्या है?

जीवन में बहुत पहले प्रारम्भिक अवस्था में बच्चे ने सीखा कि कुछ व्यवहार ऐसा होता है जिसे उसके माता-पिता भी सहन नहीं करते। उसके व्यवहार पर कुछ सीमाएँ लगी होती हैं? परन्तु माता-पिता तथा अध्यापक कई बार यह भूल जाते हैं कि उन सीमाओं को कैसे लागू किया जाए। इस बात का बच्चे के जीवन पर प्रभाव पड़ता है। विशेषकर अध्यापकों को यह याद रखने की आवश्यकता है कि इस से पूर्व कि बच्चे से सीमाओं के अनुकूल रहने के लिए अपेक्षा की जाए बच्चा उन सीमाओं को समझे।

इन सीमाओं को सारी कक्षा के हित के लिए विद्यार्थी विशेष पर लागू करने में अध्यापक को यह पहचानना चाहिए कि मात्र बच्चे को दबाने से ही उस समस्या का समाधान नहीं हो जाता है जो अनापेक्षित व्यवहार से संबंधित है। वह बालक जिसे व्यवहार की दृष्टि से आज अध्यापक एक समस्या के रूप में देख रहा है उसे इस स्थिति तक पहुँचने में वास्तव में वर्षों लग गए हैं। कई बार उसके वैयक्तिक इतिहास में उसके अनापेक्षित व्यवहार के लिए स्पष्ट कारण भी दिखाई देंगे। निम्नलिखित उदाहरण का अवलोकन करें:

शालिनी का उदाहरण : शालिनी की कक्षा अध्यापिका, श्रीमती जैन शालिनी, के विषय में इतनी चिंतित थी कि उसने शालिनी के बारे में समझने के लिए विद्यालय उपबोधक से सहायता मांगी। शालिनी कक्षा VII की छात्रा थी तथा उपस्थितियों की कमी के कारण उसके मामले की रिपोर्ट प्रधानाचार्य को की जानी थी। दोनों के द्वारा तथ्यों के ध्यान से किए सर्वेक्षण से पता चला कि शालिनी का अनुपस्थित रहना कक्षा VI के अंतिम सत्र में आरंभ हुआ जबकि वह अंकगणित के प्रश्नों को हल करने में कठिनाई का अनुभव करने लगी थी। देखा गया कि उसने अधिकांश छुट्टियाँ उन दिनों में ली जिन दिनों उसके अंकगणित की कक्षायें होती थी।

उपबोधन स्तरों की कुछ शृंखलाओं के पश्चात् उपबोधक ने अंकगणित में उसके लिए उपचारी कक्षाओं की योजना बनाई। मात्र 15 दिन की उपचारी कक्षाओं के पश्चात् ही, शालिनी के कार्य का स्तर सुधरता चला गया और उसने नियमित उपस्थितियों से संबंधित विद्यालय के अधिनियम को स्वीकार कर लिया।

3.5.2 व्यवहार तथा अनुचित व्यवहार (दुर्व्यवहार)

क्योंकि अध्यापक तथा निर्देशन कर्मियों का प्रशिक्षण तथा उनके दायित्व भिन्न भिन्न होते हैं अतः वे बच्चे के व्यवहार को भिन्न-भिन्न नजरिये से देखते हैं। अध्यापकों का सरोकार विद्यालय नियमों तशा नैतिक मानदंडों के उल्लंघन से अधिक होता है। अध्यापकों का विश्वास है कि इस प्रकार नियमों का उल्लंघन विद्यार्थियों की वैयक्तिक समस्याओं से अधिक चिंताजनक होता है। जबकि निर्देशन कर्मी तथा उपबोधक अध्यापकों की तुलना में बच्चे के आक्रामक व्यवहार को अधिक गम्भीरता से लेते हैं। तथापि दोनों का संबंध ऐसे व्यवहारों से होता है, जैसे असामाजिकता, निर्दयता, चोरी करना तथा भय आदि।

बच्चे अनुचित व्यवहार क्यों करते हैं?

कक्षा के अंदर या कक्षा के बाहर बच्चे के अनुचित व्यवहार करने का कारण ऐसी स्थिति या ऐसा व्यक्ति होता है जो उसके नियंत्रण में नहीं होता/होती। निम्नलिखित बातें कक्षा में अनुचित व्यवहार का संभावित कारण बन सकती हैं:

1. **अनभिज्ञताः** नियमों की अनभिज्ञता निश्चित रूप से वह कारण है जिससे बच्चा असामान्य व्यवहार करने लगता है। यदि विद्यार्थियों के सम्मुख नियमों की स्पष्ट रूप से संगठित नियमावली भी हो तो भी कई बार उसे यह पता नहीं चलता कि इनमें से कौन से नियम लागू हो रहे हैं और कौन से मात्र कागजों पर हैं। अतः उसके पास इस समस्या को हल करने का एक व्यावहारिक तरीका होता है; वह यह देखने के लिए परीक्षण करने लगता है, अध्यापक किस नियम को ठीक समझते हैं और किस को नहीं।

2. **परस्पर विरोधी नियमः** ऐसी अवस्था में जब कुछ व्यवहार जो घर पर (माता-पिता के साथ) प्रशंसनीय थे परन्तु विद्यालय में उन्हें अनुचित या अनैतिक माना जाता है, तो ऐसी अवस्था में विद्यार्थी एक द्वंद्व की स्थिति अनुभव करता है। उदाहरणार्थ पड़ोस के बच्चे ने उसे मारा और उसने बदले में उस बच्चे को पीट डाला। जब वह बहते खून के साथ घर पहुँचा तो माता-पिता ने उसकी चोटों पर दवा लगा दी और कोई नकारात्मक शब्द नहीं कहा। विद्यार्थी ने वैसा ही व्यवहार विद्यालय में किया तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि अध्यापक ने उसे दंड दिया।

स्पष्ट है कि बहुत से विद्यार्थी अनुशासन भंग करते हैं, मात्र इसलिए कि उनकी यह बात समझ में नहीं आती कि घर के नियमों तथा विद्यालय के नियमों में भेद कैसे किया जाए।

3. **कुंठाः** कक्षा में अनुशासन अनुपालन संबंधी समस्याओं से प्रायः यह लगता है कि जब विद्यार्थियों को असफलता का सामना करना पड़ता है तो उनकी कुंठा अत्यधिक बढ़ जाती है। कक्षा में कुंठा के कम से कम तीन स्रोत देखे गए हैं जिनसे कोई भी विद्यार्थी प्रभावित हो जाता है।

क) अध्यापक

ख) उसके सहपाठी

ग) क्रियाकलाप

अहमद का उदाहरण

अहमद अपने विद्यालय का प्रतिभाशाली छात्र था। आंरभ से ही वह अपनी उत्कृष्ट शैक्षिक उपलब्धियों के कारण विशेष योग्यता प्रमाणपत्र (distinction) तथा छात्रवृत्ति लेता आ रहा था। अब वह नवीं कक्षा में था और कक्षा अध्यापक के लिए एक समस्या बन चुका था। उसके सहपाठियों की यह शिकायत थी कि वह खाली कालांशों में उन्हें पढ़ने नहीं देता, अपने साथ खेलने के लिए उन्हें मारता है और कमज़ोर विद्यार्थियों की खिल्ली उड़ाता है।

उसकी कक्षा अध्यापिका, श्रीमती अग्रवाल ने उसकी पूर्व कक्षा अध्यापिका (VIII की कक्षा अध्यापिका) से बातचीत करने से पहले कुछ दिन प्रतीक्षा की। इस अवधि में उसने देखा कि अहमद ने पहली साप्ताहिक परीक्षा में सभी विषयों में 80 प्रतिशत अंकों से अधिक अंक प्राप्त किए थे।

श्री सिंह (जो अहमद के पूर्व कक्षा अध्यापक थे) से तथा कुछ अन्य विद्यार्थियों से, जो अहमद के साथ प्राथमिक विद्यालय से पढ़ते आए थे, बातचीत करने के पश्चात्, श्रीमती अग्रवाल ने पाया कि यह समस्या उस समय आरंभ हुई जब वह कक्षा छः में पढ़ता थी। उस समय श्री सिंह उसके कक्षा अध्यापक पहली बार बने थे (तथा कक्षा VII और कक्षा VIII में भी कक्षा अध्यापक रहे)।

श्री सिंह को सभी विद्यार्थी पसंद करते थे तथा उनके सहयोगी भी उन का आदर करते थे। कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के कारण अहमद श्री सिंह का चहेता विद्यार्थी बन गया।

एक बार अहमद ने अंग्रेजी विषय में 40 अंकों में से 39.5 अंक प्राप्त किए (इस विषय अंग्रेजी को श्री सिंह पढ़ाते थे)। अहमद ने श्री सिंह से अनुरोध किया कि उसके प्रगति अभिलेख में वह 39.5 को 40/40 लिख दें। अध्यापक ने जैसा अहमद ने अनुरोध किया, वह परिवर्तन उसके अंकों में कर दिया। यही घटना अगली परीक्षाओं में दोहरा दी गई, परन्तु अब की बार श्री सिंह ने यह 1/2 अंक स्वयं ही बढ़ा दिए और उसके अंकों को 40/40 कर दिया। ऐसी ही घटनाएँ दो अन्य विषयों में हुई जो अन्य दो अध्यापकों द्वारा पढ़ाए गए थे। प्रगति कार्ड पर हस्ताक्षर करते समय श्री सिंह ने, जहाँ भी अहमद के अंक कुल अंकों से मात्र 1/2 या एक अंक कम थे, बढ़ा कर पूरे अंक कर दिए।

श्री सिंह का यह व्यवहार अन्य कक्षा के कार्यकलापों पर भी लागू हो गया। यदि किसी विद्यार्थी ने इस पक्षपात पूर्ण व्यवहार की शिकायत भी की तो श्री सिंह ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। इसके पश्चात् अहमद ने इस उदारता त्रुटि (leniency) का शोषण करना आरंभ कर दिया और चूँकि उसके संबंध श्री सिंह से अच्छे थे अतः उसने अन्य बच्चों को सताना आरंभ कर दिया। जब यह व्यवहार नवीं कक्षा तक चलता चला गया तो यह ध्यान में आया। क्योंकि श्रीमती अग्रवाल इस प्रकार अंकों के बढ़ाए जाने के पक्ष में नहीं थीं। इससे अहमद में कुंठा के भाव जागने लगे और फलतः वह अधिकाधिक उग्र होता चला गया।

4. **विस्थापनः** अनुपयुक्त मनोवेग (sentiments) या भावनाएँ (feelings) प्रायः विद्यालय के व्यक्तियों या वस्तुओं पर विस्थापित हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, "मैरी" (एक छात्रा) यह स्पष्ट रूप से जानती थी कि वह मिस रूबी की कक्षा अर्थात् अपनी भौतिकी की कक्षा में प्रसन्न नहीं रहती थी। वह अध्यापक द्वारा पूछे गए किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाती। मिस रूबी ने कक्षा में कभी भी मैरी की आवाज नहीं सुनी। और प्रैक्टीकल की कक्षा में भी ऐसा ही होता था। वह अध्यापक से पूछने की बजाय अपने सहपाठियों से किसी प्रयोग का स्पष्टीकरण ले लेती थी। मिस रूबी ने कभी इसे असामान्य रूप में नहीं लिया। परन्तु एक दिन जब वह बरामदे में गुजर रही थी, जहाँ मैरी का कमरा था तो वह यह देखकर आश्चर्य चकित रह गई कि मैरी कक्षा में जोर-जोर से कविता वाचन कर रही थी।

   अगले दिन रूबी जानबूझ कर उस बरामदें में से कई बार गुजरी और यह जान कर और भी चकित रह गई कि मैरी सभी विषयों की कक्षा में सक्रिय रूप से भाग ले रही थी, सिवाय भौतिकी कक्षा के।

   मैरी के माता-पिता से बातचीत करने के पश्चात् यह मालूम हुआ कि मैरी की सौतेली बहन का नाम भी रूबी था जिसके साथ उसकी कभी नहीं बनी। यही था मिस मैरी के असामान्य व्यवहार का कारण।

3.5.3 अनुशासन की नई विधियाँ

जब कोई अध्यापक/उप-बोधक किसी विसामान्य (deviant) विद्यार्थी को अनुशासन में ढालना आवश्यक समझता है तो अन्य विद्यार्थियों पर भी इस विवाद का प्रभाव पड़ता है जो इसके प्रत्यक्ष दर्शी होते हैं। इसे 'रिपल' या 'तरंग' प्रभाव कहते हैं। निम्नलिखित कारक तरंग प्रभाव को प्रभावित करते हैं:

1. **स्पष्टताः** एक स्पष्ट नियंत्रण तकनीक वह होती है जिसमें विसामान्य बालक, विसामान्यता तथा अधिमान्य वैकल्पिक व्यवहार (preferred alternative behaviour) विशिष्ट रूप से दर्शाए गए हों। एक अध्यापक जो कक्षा में पीछे बैठे बच्चों में कुछ गड़बड़ देखता है और चिल्लाता हैं 'ऐ बच्चों बातें बंद करो' एक ऐसी नियंत्रण तकनीक का प्रयोग कर रहा है जिसमें कोई स्पष्टता नहीं होती है। जब सभी विद्यार्थियों को एक साथ टोका जाता है तो ऐसी अवस्था में विसामान्य बालक (deviant) भी निश्चित नहीं होते कि यह फटकार उनके लिए है या किसी अन्य के लिए।

   वही अध्यापक शोर करने वाले समूह के पास पीछे जा कर कह सकता था। "अमरजीत, राजेश तथा जॉन, बातें बंद करो तथा और इन बीजगणित के प्रश्नों को पूरा करो"। इस आदेश की स्पष्टता उच्च है और श्रोता विद्यार्थियों पर भी दो लाभकारी प्रभाव डाल सकता हैः

   i) वे इसके पश्चात् कम विसामान्य व्यवहार दर्शाएंगे।

   ii) उनके अधिगम संबंधी व्यवहार में विघ्न पड़ने की कम संभावना होगी जैसा कि अस्पष्ट तकनीक में होने की संभावना है।

2. **दृढ़ताः** 'मेरा सरोकार कार्य से है' इस प्रकार का आशय या गुण एक दृढ़ नियंत्रण तकनीक में निहित होता है। इसका संपादन अध्यापक की आवाज के लहजे से, हाव–भाव से या इशारों से हो सकता है। तथा यह परिपालन विधि (follow through) से भी संभव है जिसका अर्थ है यह देखना कि अनुशासन संबंधी आदेश पूरे किए जाते हैं। पुनीत अपने पैन को बार-बार डैस्क पर मारकर खेल रहा था। इसके इस कार्य पर सभी सहपाठियों का ध्यान था और फलस्वरूप अध्यापक श्यामपट्ट पर क्या कर रहा है, इस बात की ओर किसी का ध्यान नहीं रहा। अध्यापिका ने एक दम लिखना छोड़ और एक सख्त आवाज में आदेश दिया 'पुनीत इस पैन को अपने बस्ते में रखो और इधर ध्यान दो'।

   अपना समस्त अवधान पुनीत पर केन्द्रित करते हुए अध्यापिका पुनीत को देखती रही कि वह अपने बैग की जेब को खोलता है, पैन को अंदर रखता है, इसे पुनः बंद करता है। जब पुनीत यह सब कार्य करने के पश्चात् अध्यापिका की ओर अभिमुख हुआ तभी अध्यापिका ने अपना कार्य पुनः आरंभ किया।

3. **संकेन्द्रणः** संकेन्द्रण नियंत्रण की दो तकनीकें हैं; i) अनुमोदन - संकेन्द्रित तकनीक (Approval focussed) तथा ii) कार्य-संकेन्द्रित तकनीक (task – focussed)। अनुमोदन - संकेन्द्रित तकनीक अपने प्रभाव के लिए अध्यापक और विसामान्य बालक के बीच संबंध पर निर्भर करती है। जबकि कार्य संकेन्द्रित तकनीक में अध्यापक की अपेक्षाओं तथा कार्य के बीच संयोजन स्थापित किए जाते हैं।

   अध्यापक द्वारा संकेन्द्रण-नियंत्रण तकनीकों के उपयोग के उदाहरणः

   i) **अनुमोदन-संकेन्द्रितः** मुझे बड़ी निराशा हुई, जब मैंने आपको बातें करने से मना किया परन्तु आप फिर भी चुप नहीं हुए। मेरा विचार था कि इन सब कार्यो की तुलना में आप मेरा आदर अधिक करते थे।

   ii) **कार्य-संकेन्द्रितः** आपको चाहिए कि जब मैं पढ़ाऊं तो चुप रहें और सुनें, अन्यथा आप बाद में मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाएँगे। मैं इस पाठ को दुबारा नहीं पढ़ाऊगा।

   iii) **संकेत अवरोध (Signal interference)**: बिना शब्दों का प्रयोग किए अध्यापक अपने तेवरों से या और कुछ संकेतों द्वारा अनुशासनभंजक विद्यार्थी को यह स्पष्ट कर देता है कि वह उसके विषय में जानता है कि वह क्या अनुचित व्यवहार कर रहा/रही है। उदाहरण के लिए एक कुपित या क्रुद्ध मुद्रा का प्रयोग करना, उसकी सीट के निकट खड़े होना इत्यादि।

iv) **स्थानिक (भौतिक) सान्निध्य (समीपता)**: एक कक्षा का संचालन करते समय, समीपता का सिद्धान्त भी काफी लाभकारी होता है। जैसे दोषियों को अध्यापक की कुर्सी के पास बिठाकर, अध्यापक उनकी शरारतों पर नियंत्रण रख सकता है।

v) **अभिप्रेरणात्मक पुनरावेशन (Motivational recharging)**: कई बार अध्येता कक्षा में मात्र इसलिए अनुचित व्यवहार (शरारत) करते हैं क्योंकि नियमित कार्यक्रम से ऊब जाते हैं। ऐसी अवस्था में शिक्षण विधियों में कुछ परिवर्तन करना उपयुक्त होगा। उदाहरण के लिए: अध्यापक कक्षा के आरंभ में या उस के अंत में कुछ छोटे-छोटे खेल खिला सकता है ताकि विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा को पुनःआवेशित किया जा सके। ये खेल हो सकते हैं: प्रश्नावली, भूमिका अभिनय इत्यादि।

vi) **हास-परिहासजन्य विश्रांति (comic relief)** उस अवस्था में जबकि वे किसी समय कार्य से ऊब जाते हैं विद्यार्थियों को नियंत्रण में रखने की यह एक और विधि है। अतः अध्यापक कुछ हंसी मजाक की टिप्पणी कर सकते हैं और विद्यार्थियों को भी वैसी टिप्पणी करने के लिए उत्साहित कर सकते हैं।

vii) **कार्योत्तर जाँच सत्र (Post-mortem Session)** : यदि कोई अध्यापक किसी बच्चे को अनुचित या अभद्र व्यवहार करते देखे तो वह तत्काल उस बच्चे को कुछ न कहें, मात्र सामान्य रूप से इतना कहें 'अपने व्यवहार को ठीक करें।' परन्तु कक्षा समाप्ति पर वह अध्यापक उस विद्यार्थी को कक्षा से बाहर ले जाएँ तथा कक्षा में किए गए अनुचित व्यवहार के विषय में बच्चे से बातचीत करें। उस व्यवहार की पूर्ण विवेचना करें ताकि बच्चा यह समझ सके कि उसका व्यवहार वस्तुतः अनुचित था तथा ऐसा उसे नहीं करना चाहिए।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना कीजिए।

11. संक्षिप्त रूप में व्याख्या कीजिए।

क) परस्पर विरोधी नियम

....

....

....

ख) विस्थापन

....

....

....

....

ग) दृढ़ता

....

....

....

12. निम्नलिखित का परस्पर मिलान कीजिएः

तकनीक	उदाहरण
i) स्पष्टता	क) ज्यॉयस, जाइए और इस स्याही के धब्बे को धोकर आइए। मैं जब तक पढ़ाना आरंभ नहीं करूँगा जब तक तुम लौट कर नहीं आ जाते।
ii) दृढ़ता	ख) "देखिए, बिल्कुल ऐसा ही एक बार मेरे साथ भी हुआ और मेरे अध्यापक ने उत्तर दिया ....।"
iii) संकेन्द्रण	ग) सुमीत, यह फिजूल की बात बंद करो और श्यामपट्ट की ओर ध्यान दो।
iv) विरति	घ) इस डिब्बे से न खेलो। यदि यह टूट गया तो आपकी परियोजना संचालित नहीं हो पाएगी तथा अतः कोई अंक नहीं मिलेंगे।
v) अभिप्रेरणात्मक पुनरावेशन	ङ) आज बहुत गर्मी है, आइए बदलाव के लिए कुछ हल्का फुलका कार्य करें। एक छोटी सी प्रश्नोत्तरी कैसी रहेगी?

13. निम्नलिखित में से अनुशासन की सर्वोत्तम परिभाषा कौन सी है?

क) आत्म-नियंत्रण तथा क्रमबद्ध आचरण विकसित करने के लिए दिया गया प्रशिक्षण।

ख) सत्ता को स्वीकार करना अर्थात् उसकी अधीनता में रहना।

ग) दिए गए नियमाधिनियम के प्रति अथवा एक बाह्य सत्ता के प्रति आंतरिक अनुशासन की भावना।

14. निम्नलिखित कथनों को सत्य और असत्य दो वर्गों में विभाजित कीजिएः

क) अनुशासन के बिना अध्यापन तथा अनुशासन के साथ अध्यापन एक जैसी ही चीज है।

ख) बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है कि वे अपने व्यवहार पर लगाए प्रतिबंधों के पीछे निहित तर्क को समझें।

ग) बच्चा जब भी अभद्र व्यवहार करे, उसे सदैव दंडित किया जाए।

घ) एक कार्य-संकेन्द्रित नियंत्रण तकनीक का तरंग प्रभाव एक अनुमोदन-संकेन्द्रित/ तकनीक विधि से अधिक होता है।

ङ) किसी बच्चे के अभद्र या अनुचित व्यवहार के संदर्भ में बच्चे की समस्या पर कक्षा से बाहर चर्चा करना अच्छा होता है न कि समस्त कक्षा के सम्मुख उसके व्यवहार के लिए उसे फटकारना।

3.6 सारांश

निर्देशन कार्यक्रम का विद्यालय के लिए योगदान इन रूपों में होता हैः क) पाठ्यक्रम निर्माण में सहायक होना; ख) कक्षा में श्रेष्ठ अधिगम-अनुभव प्रदान करना; तथा ग) कक्षा अनुशासन संबंधी समस्याओं से निपटने के लिए विभिन्न रीतियों का सुझाव देना।

पाठ्यचर्या पर उन सभी सुनियोजित अधिगम अनुभवों के रूप में चिंतन गया है जो विद्यालय अपने विद्यार्थियों को प्रदान कर सकता है। इससे बच्चों की सामान्य तथा विशिष्ट दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए तथा सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकताएँ तथा अपेक्षाएँ भी पूरी हो जानी चाहिए। एक उपयुक्त पाठ्यचर्या में उन सभी बातों को भी ध्यान में रखना चाहिए जो अधिगम प्रकिया के विषय में ज्ञात हैं। विद्यालयी विषयों के माध्यम से निर्देशन की सभीक्षा की गई जिसमें मूल्य विकास पर विशेष बल दिया गया।

अधिगम को अनुभवों के माध्यम से व्यवहार में लाए गए परिवर्तन के रूप में समझा गया। अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तित्व के बौद्धिक एवं शारीरिक दोनों पक्षों की आवश्यकता पड़ती है। अधिगम को सुकर बनाने के लिए कुछ मनोवैज्ञानिक कारकों, जैसे - अभिप्रेरणा, आवश्यकताएँ इत्यादि, को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

किसी भी व्यक्ति को, जो कक्षा में पढ़ाने के आशय से जाता है चाहे वह कक्षा अध्यापक हो, विषय अध्यापक हो, उप-बोधक हो, अथवा कोई अन्य आमन्त्रित व्यक्ति हो, यह भली-भांति विदित होता है कि यदि कक्षा अनुशासित हो तो अध्यापन सरल हो जाएगा। अनुशासनहीनता उस समय उत्पन्न होती है जब या तो व्यक्ति नियमों से अनभिज्ञ हो या नियम परस्पर विरोधी हों, बच्चे कुंठित रहते हों या फिर भाव विस्थापन (feeling displacement) घटित हो गया हो। इन अवस्थाओं को मैरी का उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया है। स्पष्टता, दृढ़ता, तथा संकेन्द्रण इत्यादि उन कुछ तकनीकों के उदाहरण है जिनके द्वारा कक्षा में अनुशासन कायम रखा जा सकता है अथवा स्थापित किया जा सकता है।

3.7 अभ्यास कार्य

1. किसी कक्षा का दौरा करें और किसी कक्षा की आवश्यकताओं की पहचान करें, जो एक संगत व सार्थक पाठ्यचर्या का प्रथम मानदंड है। विद्यालय के कार्यकलापों का प्रेक्षण करें और मालूम करें कि पाठ्यचर्या किन-किन आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही है तथा कौन सी आवश्यकताएँ पूर्ण नहीं हो रही हैं। एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

2. किसी एक कक्षा का प्रेक्षण करें तथा मालूम करें कि किस प्रकार कक्षा के अनुशासन में अध्यापक का व्यक्तित्व एक महत्वपूर्ण घटक है।

3. किसी एक ऐसे विद्यार्थी का प्रेक्षण करें जो अनुशासन संबंधी समस्याएँ उत्पन्न कर रहा है। इस विद्यार्थी के उदाहरण की सहायता से या इस संदर्भ में उन सभी प्रश्नों के उत्तर तैयार कीजिए जो ऊपर उप-इकाई "अनुशासन" के अंतर्गत अनुशासन संबंधी समस्याओं के परिचालन के लिए दी गई निर्देशिका में पूछे गए हैं।

4. निर्देशन और पाठ्यचर्या को समाकलित (संघटित) करने की आवश्यकता हमें क्यों पड़ती है?